INSTITUTE OF ADVANCE STUDIES IN EDUCATION

Bilaspur (Chhattisgarh)

PSYCHOLOGICAL FOUNDATION OF EDUCATION

Presented By:

Dr. Vidya Bhushan Sharma

Lecturer

I.A.S.E. , Bilaspur (C.G.)

INSTITUTE OF ADVANCE STUDIES IN EDUCATION

Bilaspur (Chhattisgarh)

MEd. - 1ST SEM.

Unit -2 Development

Presented By:

Dr. Vidya Bhushan Sharma

Lecturer

I.A.S.E. , Bilaspur (C.G.)

Development :-

Concept
(अवधारणा)
Principles
(सिद्धांत)
Stages of Development
(विकास की अवस्था)
Factor Influencing Development
(विकास को प्रभावित करने वाले)
Genetic, Environment & Physical
(अनुवांशिक पर्यावरण और शारीरिक)

MEANING OF DEVELOPMENT -

मानव विकास से तात्पर्य उसकी अभिवृद्धि के साथ–साथ उसके शारीरिक एवं मानसिक व्यवहार में होने वाले परिवर्तन से होता है ।

फ्रैंक : "Development refers to the changes in organism as a whole."

विकास से तात्पर्य प्राणी में होने वाले सम्पूर्ण परिवर्तन से होता है ।

विकास शरीर के गुणात्मक परिवर्तनों को कहते है विकास का एक निश्चित क्रम होता है जो आजीवन चलता रहता है परन्तु विकास की गति व्यक्ति विभिन्नता को प्रभावित करती है ।

बालक का विकास पूर्ण जीवन चलता रहता हे चाहे वह विकास शारीरिक हो या मानसिक ।

शारीरिक विकास से संबंध :– वजन, शक्ति, स्वास्थ्य से है, बालक का विकास शारीरिक व मानसिक ही नहीं होते अपितु यह बौद्धिक (Intellectual) भाषायी, संवेगात्मक, सामाजिक, नैतिक, धार्मिक, सांस्कृति व आध्यात्मिक भी होता है ।

उपरोक्त विवेचना के आधार पर हम कह सकते है कि मानव विकास एक निरंतर एवं क्रमिक विकास की प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति में मात्रात्मक एंव गुणात्मक वृद्धि होती है और नवीन विशेषताएँ एवं योग्यताएँ प्रकट होती है तथा उत्तरोत्तर उसके व्यवहार में परिवर्तन होता है ।

PRINCIPAL OF DEVELOPMENT -

आधुनिक युग में शिक्षा बालक को ध्यान में रखकर दी जाती हे जिसके लिए अध्यापक को बालक की अभिवृद्धि व विकास का ज्ञान होना चाहिए ।

1. **निरंतर विकास का सिद्धांत** (Principle of Continuous Growth)

विकास की प्रक्रिया एक शाश्वत प्रक्रिया है जो निरंत चलती रहती है । शिशु से लेकर प्रौढ़ तक सदा परिवर्तन होता रहता है । कोई व्यक्ति जैसा आज है वैसा कल नहीं रहेगा ।

स्किनर (Skinner):– महोदय के अनुसार – विकास पक्रियाओं की निरन्तरता का सिद्धांत केवल इस तथ्य पर बल देता है कि व्यक्ति में कोई आकस्मिक परिवर्तन नहीं होता ।

2. **समान प्रतिमान का सिद्धांत** (Principle of Uniform Pattern)

पशु जगत में जिस प्रकार के परिवर्तन होते हैं, उसी प्रकार के परिवर्तन मनुष्य जाति में नहीं होते । मनुष्यों के प्रति पशु–पक्षियों के प्रतिमानों से भिन्न होते है ।

हरलॉक (Harlock):– के अनुसार – प्रत्येक जाति चाहे वह पशु जाति हो या मानव जाति, अपनी जाति के अनुरुप विकास के प्रतिमान का अनुसरण करती है ।

3. **विकास की नीति में व्यक्तिगत विभिन्नताओं का सिद्धांत** (Principle of Individdual difference in Rate of Growth)

मानव जाति के विकास के प्रतिमानों में समानता है किन्तु विकास की गति में भिन्नता होता है।

4. **विकास क्रम का सिद्धांत** (Principle of Development Sequence)

मनोवैज्ञानिकों ने अनेक अध्ययनों के आधार पर वह सिद्ध कर दिया है कि बालक का गामक (Motor) और भाषा सम्बन्धी विकास का एक निश्चित क्रम होता है। बच्चा पहले बैठताहै फिर खड़ा होता है, तब चलता है। पहले तुतलाता है, तब स्पष्ट बात करता है।

गैसेल (Gesell):– ने कहा है कि – मानव का विकास एक निश्चित क्रम में होता है।

5. **विकास की दिशा का सिद्धांत** (The Principle of Development Direction)

मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों से यह स्पष्ट किया कि मनुष्य का किसी भी प्रकार का विकास एक निश्चित दिशा में होता है।

6. **एकीकरण एवं पारम्परिक सम्बन्ध का सिद्धांत** (The Principle of Integration and Inter-relationship)

प्रत्येक बालक पहले अपने शरीर के पूर्ण अंग को और फिर अंग के भागों को चलाना सीखता है।

7. **सहसंबंध का सिद्धांत** (Principle of Co-relation)

मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों से यह सिद्ध किया कि बालक के अधिकांश गुणों में सहसंबंध पाया जाता है।

8. **वंशानुक्रम एवं वातावरण की अन्तःक्रियाओं का सिद्धांत** (The Principle of Interaction of Heredity and Environment)

इस सिद्धांत के अनुसार बालक का विकास वंशानुक्रम एवं वातावरण की अन्त:क्रिया का परिणाम है। वंशानुक्रम उन सीमाओं को निश्चित करता है, जिनके आगे बालक का विकास नहीं किया जा सकता।

9. **सामान्य से विशिष्ट प्रक्रियओं का सिद्धांत** (Principle of General to Specific Responses)

मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों से यह सिद्ध किया कि बालक का विकास सामान्य प्रतिक्रियाओं से विशिष्ट प्रतिक्रियाओं की ओर होता है।

विकास की अवस्थाएँ (Stages of Development)

विश्व प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिकों के अनुसार विकास प्राणी में प्रगति–सूचक परिवर्तन है जो एक निश्चित लक्ष्य की दिशा की ओर लगातार निर्देशित होताहै विकास की प्रक्रिया को भली–भांति जानने हेतु विकास की विभिन्न अवस्थाओं का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक प्रतीत होता हैं विकास की विभिन्न अवस्थओं के समय के संबंध में मनोवैज्ञानिकों में मतैक्य नहीं है । भारत और विदेशों में विकास की अवस्थाओं के संदर्भ में विचार किये गये है । नीचे कुछ वर्गीकरण दिए जा रहे है –

(क) भारतीय हिन्दू ग्रन्थों के अनुसार – विकास की चार अवस्थाएँ निर्धारित की गयी है । – जो निम्नलिखित है –

(1) शैशवावस्था (Infancy) – जन्म से 5 वर्ष की आयु तक ।

(2) बचपनावस्था (Childhood) – 5 वर्ष की आयु से 10 वर्ष की आयु तक ।

(3) बाल्यावस्था (Boyhood) – 10 वर्ष की आयु में 15 की वर्ष की आयु तक ।

(4) प्रोढ़ावस्था (Youth) – 15 वर्ष की आयु से ऊपर ।

(ख) हरलॉक ने अपना विस्तृत वर्गीकरण प्रस्तुत किया है, जो निम्नलिखित है –

(1) गर्भावस्था (**Prenatal Stage**) – गर्भधारण के दिन से 280 दिन ।

(2) शैशवावस्था (**Infancy**) – जन्म से 14 दिन तक ।

(3) बचपनावस्था (**Babyhood**) – 14 दिन से 2 वर्ष की आयु तक ।

(4) बाल्यावस्था (**Childhood**) – 2 वर्ष से 11 वर्ष की आयु तक ।

(5) किशोरावस्था (**Adolescence**) – 11 वर्ष की आयु से 21 वर्ष की आयु तक ।

किशोरावस्था को हरलॉक ने तीन भागों में विभाजित किया है –

(i) पूर्व किशोरावस्था – 11 वर्ष से 13 वर्ष की आयु का ।

(ii) आरंभिक किशोरावस्था – 13 वर्ष से 17 वर्ष की आयु का ।

(iii) उत्तर किशोरास्था – 17 वर्ष से 21 वर्ष की आयु का ।

(ग) डॉ. अरनेस्टजोन्स का वर्गीकरण – जोन्स महोदय द्वारा विकास की प्रतिपादित अवस्थाओं को वर्तमान समय में अध्ययन की दृष्टि से अधिक उपयुक्त माना गया है । इनके अनुसार बालक का विकास चार सुस्पष्ट अवस्थाओं में होता है ।

(1) शैशवावस्था (**Infancy**) – जन्म से 5 या 6 वर्ष तक ।

(2) बचपनावस्था (**Babyhood**) – 6 वर्ष से 12 वर्ष तक ।

(3) किशोरावस्था (**Adolescence**) – 12 वर्ष से 18 वर्ष तक ।

(4) प्रोढ़ावस्था (**Youth**) – 18 वर्ष की आयु के बाद का समय ।

FACTOR

(1) बुद्धि (Intelligence)

(2) पोषण (Nutrition)

(3) लिंगभेद (Sex Difference)

(4) Fresh air & Sunlight

(5) Disease and Injuries

(6) अन्त:सुवीग्रन्धि (Glands and Internal Secretism)

(7) परिवार की स्थिति

(8) प्रजाति

(9) संस्कृति